सरस आख्यानों का शरबत : पुतली ने आकाश चुराया

देवीलाल गोदारा

माधव हाड़ा मध्यकालीन साहित्य के गंभीर अध्येता हैं। उनका मन ही मध्यकाल में रमता है। अगर थोड़ा साहस करूँ, तो यह भी कहना कोई अतिशयोक्ति न होगी कि वर्तमान में मध्यकालीन कविता पर काम कर रहे विद्वानों में उनकी रेंज सबसे ज्यादा है। उन्होंने मध्यकाल पर कई किताबें लिखी हैं। मीरा पर केन्द्रित आलोचना की दो पुस्तकें 'पचरंग चोला पहर सखी री' और 'वैदहि औखद जानै' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त मध्यकालीन संतों और भक्तों की प्रमुख वाणियों का संपादन कर आपने बड़े अभाव की पूर्ति की है। हाल ही में राजपाल से प्रकाशित कृति 'पुतली ने आकाश चुराया' चर्चा में है। प्रस्तुत पुस्तक आठ मध्यकालीन आख्यानों के स्त्री पात्रों पर केन्द्रित है। इस पुस्तक में जिन आठ स्त्रियों का उल्लेख है, हिन्दी विषय में शोध करने वाले उनमें में तीन को जानते हैं: राजमती, पद्मावती और मारू। और विस्तार में जाएँ तो इतना जानते हैं कि राजमती का पति रूठकर उड़ीसा चला गया था। पद्मावती के पास एक बोलने वाला तोता था और मारू राजस्थान की सुन्दरतम युवती थी। राजस्थान की लोक गायिकी ने मारू/मारवणी को धडकनें दीं। मारू के बारे में अकादमिया से अधिक लोक जानता है। कुवलयमाला और पद्मिनी का संबंध अकादमिया में जेआरएफ होने तक का है। पाठ्यक्रम में इन ग्रंथों से एकाध खंड शामिल किया जाता है, इसलिए विश्वविद्यालयों में इन प्राचीन ग्रंथों के विस्तृत अध्ययन का रिवाज नहीं है। विश्वविद्यालयों में इन ग्रंथों को बिना पढ़े मास्टर की डिग्री मिलती रही है, रहेगी।

बहरहाल, माधव हाड़ा ने इस पुस्तक के माध्यम से एक बड़ा काम यह किया है कि इन आठ ग्रंथों (नरपति नाल्ह कृत बीसलदेव रासो, ढोला मारू रा दूहा, जिनहर्षगणि की 'रयणसेहरनिवकहा', जायसी कृत कन्हावत और पद्मावत, हेमरतन कृत गोरा बादल पदमिणी चउपई, लोककथा नरसी जी रो माहेरो, और उद्योतन सूरि की कुवलयमालाकहा) के कथानकों को संक्षिप्त में प्रस्तुत करते हुए इनके स्त्री-पात्रों को एक गरिमा दी है।

कथानक के स्तर पर लगभग कहानियाँ एक-दूसरे ने साम्य रखती हैं। पूर्वजन्म के प्रसंग, स्वप्न में प्रेम, नायिका के लिए अधिकतर नायकों का दक्षिण दिशा में जाना, वाक्पटु पक्षी आदि-आदि। सत्यनिष्ठ राजमती और पाककला में निपुण प्रभावती का अहंकार इन कहानियों को आगे बढ़ाता है।

लेखक ने इसकी भूमिका में लिखा है कि ‘इन स्त्रियों का पुरुषों के साथ संबंध सदैव प्रेम, निष्ठा और समर्पण का नहीं है।‘ यह सही है कि प्रेमाधिक्य की स्थिति में ये नायिकाएँ अपने बालम के पैरों की जूती बनने को तैयार हैं। लेकिन जहाँ ये अपनी अस्मिता और अधिकार के लिए सक्रिय होती हैं, वहाँ इनका मुखर चरित्र सामने आता है। 'प्रेम और युद्ध में सब जायज है' को मालवणी सिद्ध करती है। वह मारू के भेजे हुए किसी भी सन्देशवाहक को ज़िन्दा वापस नहीं जाने देती। राजमती की कटूक्तियाँ और व्यंग्य भी किसी शस्त्र से कम नहीं हैं। इस आलेख में दो पात्रों पर संक्षिप्त में कुछ बातें कही गई हैं। जायसी की 'राधा' और उद्योतन सूरि की 'कुवलयमाला'।

'कन्हावत' जायसी की कम चर्चित रचना है। यह मूलतः कृष्ण काव्य है। इसमें विष्णु का एक दूसरा ही रूप सामने आता है। ब्रह्मा के आग्रह पर विष्णु अवतार लेने से मना कर देते हैं। कहते हैं कि रामावतार में पत्नी-वियोग के साथ बहुत कष्ट देखे, अब अवतार नहीं लूँगा। ब्रह्मा आश्वस्त करते हैं कि आपके लिए सोलह हज़ार गोपिकाएँ उपलब्ध रहेंगी और राग-रंग की स्थितियाँ हमेशा रहेंगी। जायसी लिखते हैं–

"देखि सरूप इस्तिरी, पुनि माया लपटान।

पाछिल दुःख सो बिसरिगा, जग अवतरा आन।"

विष्णु स्त्री की आसक्ति में फिर माया से लिपटकर अपना पिछला दुःख भूल गए और पुनः अवतार ले लिया। इस कथानक में कृष्ण-लीला के जाने-पहचाने प्रसंग हैं। कुछ नई कल्पनाएँ हैं। जैसे : कृष्ण और गोरखपथी साधु का शास्त्रार्थ। इसके निष्कर्ष में सबको समान रखा गया है, यानी ‘जोगी कर जोग भल, भोगी केर भोग।‘

यहाँ भक्ति-योग का द्वंद्व नहीं है। जिसको जो रुचे, वही ठीक। 'कन्हावत' में एक दिलचस्प प्रसंग आता है। परंपरा में दैहिक सौंदर्य के जो उपमान हैं, कृष्ण कहते हैं कि राधा ने उन उपमानों की चोरी करके अपनी देह को सुन्दरतम बनाया है। राधा चोरनी है। इस सन्दर्भ में मुझे रीतिकालीन कवि बेनी वाजपेयी याद आए, ये जायसी के 300 साल बाद में हुए हैं। उन्होंने भी राधा के लिए लिखा है :

“करि की चुराई चाल सिंह की चुराई लक,

ससी को चुरायो मुख नासा चोरी कीर की।

पिक को चुरायो बैन, मृग को चुरायो नैन,

दसन अनार हाँसी गूजरी गंभीर की।

कहे कवि बेनी, बेनी व्याल की चुराय लीन्ही,

रति रति सोभा सब रति के सरीर की।

अब तो कन्हैया जी को चित्त ही चुराय लीन्हो,

चोरटी है गोरटी या छोरटी अहीर की।“

यह प्रभाव है, छाया है या भाव-साम्य; माधव सर बेहतर बताएँगे। साहित्य की विराट परंपरा में भाव-साम्यता के ऐसे अनगिन उदाहरण मिल जाएँगे।

इसी सन्दर्भ में मुझे 'कमर मुरादाबादी' याद आए :

"अब मैं समझा तेरे रुख़सार पे तिल का मतलब

दौलते हुस्न पे दरबान बिठा रखा है।"

कमर मुरादाबादी का जन्म सन् 1910 का है। मेरे पास सन् 1892 की प्रकाशित मुबारक कवि की एक पुस्तक 'तिलशतक' है, जिसमें यह दोहा संकलित है :

'गोरे मुख पर तिल लसै, मैं जान्यो किय हेत।

रूप खजाने पर मनो, हबसी पहरा देता (मुबारक)

कमर साहब ने मुबारक कवि के दोहे को हूबहू ले लिया है। और दुखद यह है कि कमर जलालाबादी की इस शेर के आधार पर प्रशंसा की जाती रही है।

‘कुवलयमालाकहा’ के कथानक को पढ़ते हुए मुझे यह प्रतीति हुई :

'जस केले के पात में, पात पात में पात।

तस ज्ञानी की बात में, बात बात में बात।'

यहाँ सिर्फ़ नामकरण का आधार कुवलयमाला है। कुवलयमाला मुख्यपात्र नहीं है। दरअसल इस आख्यान में कोई मुख्यपात्र प्रतीत नहीं होता। यह 8 वीं सदी की जटिल कथानक की रचना है। जिनधर्म की महत्ता के लिए ही इसे लिखा गया जान पड़ता है। कुवलयमाला के सभी पात्र श्री

धर्मनंदन से दीक्षा लेने को बैठे हैं। ज्ञान के लिए पाँच चीजों क्रोध, मान, माया, लोभ, और मोह से बचने की सलाह दी गई है। सभी का एक-एक दृष्टान्त भी प्रस्तुत है। सभी पात्र अंत में जैन धर्म में दीक्षित होकर पापमुक्त होते हैं। कहानियाँ सरल हैं, एक रेखीय। व्यास कथाओं सी। इसमें स्त्री-पात्रों की क्षणिक उपस्थिति है। कुवलयमाला का प्रवेश बहुत देर से कहानी में होता है।

इस पुस्तक की भूमिका में लेखक की इतिहास-दृष्टि पर बहुत अर्थपूर्ण टिप्पणियाँ की गई हैं। लेखक का मानना है कि भारतीय चेतना घटे हुए को यथार्थ नहीं मानती। वह मानती है कि बीते हुए का कोई भी ब्यौरा प्रमाणिक न होकर पुनर्रचना ही होगा जिसमें इतिहास के साथ आख्यान का भी मिश्रण होगा। भारतीय मनीषा के इसी मनोविज्ञान के आधार पर लेखक ने निष्कर्ष निकाला है कि "ये रचनाएँ पूरी तरह गल्प और झूठ नहीं हैं। इनके गल्प में इतिहास भी यहाँ-वहाँ अटका हुआ है, जैसा कि प्रायः भारतीय कथा-आख्यानों में होता है।" भारतीय मनीषा इतिहास को इसी रूप में सहेजती आयी है। यह औपनिवेशिक शिक्षा और संस्कार का दुष्परिणाम है कि हम इन कथाओं को आख्यान और गल्प मानकर इतिहास के दायरे से बाहर कर देते हैं। इन टिप्पणियों में भारतीय इतिहास लेखन के टूल्स और कुंजियाँ की ओर लेखक ने संकेत किया है।

आठों आख्यानों के बाद कथा के 'स्रोत-ग्रन्थ' के रूप में संक्षिप्त में संबंधित पुस्तक के बारे में महत्त्वपूर्ण टिप्पणी संलग्न है। जो लेखक के अच्छे अध्येता होने की पहचान है। प्रकाशन, काल और भाषा के बारे में ये टिप्पणियाँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। हालाँकि इन कहानियों का संक्षिप्त रूपांतरण ही हमारे सामने है, लेकिन कहीं भी कथा खंडित न होने पाई है। मुझे यह पुस्तक 'पुतली ने आकाश चुराया' पढ़कर मुंज कवि का एक दृष्टान्त याद आता है :

मालवा नरेश भोज के चाचा जब युवक थे तो तैलप देश पर चढ़ाई की, वहाँ पकड़े गए और जेल में डाल दिए गए। शत्रु शासक की अधेड़ बहन मृणालवती ने जब पहली बार इनको देखा तो प्रेम में पड़ गई। उधर मुंज के सिपाहियों ने जेल तक सुरंग खोद डाली और मुंज से भाग चलने को कहा। मुंज ने मृणालवती को भी साथ चलने को कहा। मुंज युवक था, मृणाल अधेड़। वह उदास हो गई। उसकी उदासी को लक्ष्य करके मुंज ने कहा–

"मुंज भणइ मुणालवई, जुब्वण गयउ न झूरि।

जइ सक्कर सय खंड थिय, तो इस मीठी चूरि।"

अर्थात् हे मृणाल गए हुए यौवन का संताप न कर, शक्कर के सौ खंड कर दिए जाएँ, तब भी वह मीठी ही रहती है। ये आख्यान भी ऐसे ही हैं। एकदम सरस और मीठे।